विद्या - भवन बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग - द्वितीय विषय - हिंदी

एन.सी.ई.आर.टी पर आधारित

दिनांक - 23- 10- 2021

बड़ा क्या है?

सुप्रभात बच्चों ,

आज की कक्षा में आपको बड़ा क्या है? कहानी के बारे में अध्ययन करना है, जो इस प्रकार है।

एक बड़े राजा की राजसभा में एक ब्राह्मण रहते थे। ब्राह्मण जैसे पंडित थे, वैसे ही सुशील भी। जीव हिंसा, चोरी, मिथ्या भाषण आदि के पास भी वह नहीं जाते थे। राजा उनको खूब चाहते और उनका काफी सम्मान करते। अन्य सभी लोग भी उनके प्रति आदर–भाव रखते थे।

एक दिन उन्होंने सोचा–''अच्छा, राजा जो मेरी इतनी खातिरदारी, इतना आदर–सम्मान करते हैं, वह क्यों? मेरी जाति के लिए, या मेरे कुल के लिए या देश, विद्या और चरित्र इनमें से किसी एक के लिए? अच्छा तो एक दिन इसकी परीक्षा क्यों न की जाए?''

राजा के एक कर्मचारी थे। ये राज्य से जिसका जो कुछ रुपया–पैसा पावना होता था, उसे हिसाब करके चुकाते थे। ब्राह्मण की ये भी बड़ी भक्ति किया करते थे। एक दिन ब्राह्मण राजसभा में राजा के साथ भेंट करके घर लौटे जा रहे थे। उसी समय उस राजकर्मचारी ने आदमियों को देने के लिए जो रुपया–पैसा संभालकर रखा था, ब्राह्मण आँख बचाकर उसमें से कुछ लेकर चुपके से चल दिए। राजकर्मचारी ने यह देखा, लेकिन वे उनकी खूब भक्ति करते थे अतएव उस दिन कुछ न बोले। ब्राह्मण फिर एक दिन रुपया चुराकर चले।

राजकर्मचारी टेर पाते ही 'चोर, चोर' कहकर चिल्ला उठे। चारों ओर से आदमी–जन दौड़कर आ पहुँचे और ब्राह्मण को पकड़ लिया। उन्होंने कहा, ''वाह बाबाजी, इतने दिनों तक खूब सच्चरित्र और सुशील बनते थे! अब चलो राजा के पास।''

ब्राह्मण को धर–पकड़कर वे राजा के पास ले गए और सारी घटना कह सुनाई।

राजा सुनकर बड़े दुःखी हुए। बोले, ''ब्राह्मण तुम ऐसे दुःशील हो–इतने दुष्ट हो।'' यह

कहकर राजा ने कहा, ''ले जाओ, इसे यथोचित दंड दो।''

ब्राह्मण ने कहा, ''महाराज, मैं चोर नहीं हूँ।''

राजा ने कहा, ''तुम अगर चोर नहीं हो तो ऐसा काम क्यों किया?''

ब्राह्मण ने तब सारी बातें खोलकर कहीं, ''महाराज, आप मुझसे बड़ा प्रेम करते थे, बड़ा आदर–सम्मान करते थे। लोग भी मेरी भक्ति करते थे। यही देखकर मैंने सोचा कि मेरा इतना मान–सम्मान किसलिए है? यह मेरी जाति, विद्या, कुल, देश या चरित्र के लिए? इसी की परीक्षा करने के लिए, महाराज, मैंने आपका धन चुराया था। अब मैं समझ रहा हूँ कि जो कुछ मान–सम्मान है, सब कुछ चरित्र के गुण से है, जाति, कुल, देश या विद्या के लिए नहीं।''

ब्राह्मण इसके बाद संन्यासी होकर तपस्या करने चले गए।

गृहकार्य

दिए, गए अध्ययन सामग्री को पूरे मनोयोग से पढ़ें तथा समझने का प्रयास करें-

****

ज्योति